HISTORY

B.A.PART- I (Hons.)

Paper-I (History of India Upto1206)

UNIT-I (Aranyaka, Upanishad & Vedang Sources of Ancient Indian History)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 06

(इस PDF का Audio or videos देखने के लिए नीचे लिखे लिंक को follow करें 👇👇👇

https://youtu.be/KC5dv6rY9Eo

वैदिक स्रोत(आरण्यक ग्रंथ, उपनिषद ग्रंथ, वेदांग)

इन स्रोतों के द्वारा भी प्राचीन भारतीय इतिहास के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

@ आरण्यक ग्रंथ:-

ब्राह्मण ग्रंथों के बाद आरणयक ग्रंथों का स्थान आता

है।

* आरण्यकों में दार्शनिक एवं रहस्यात्मक विषयों का वर्णन होता है| इन ग्रंथों को आरण्यक इसलिए कहा गया क्योंकि इन ग्रंथों को "आरणयक"अर्थात वन में पढ़ा जाता है|

@ आरण्यकों की कुल संख्या 7 है|

(१) ऐतरेय आरण्यक

(२) शांखायन

(३) तैत्तिरीय

(४) मैत्रायणी

(५)मध्यन्दिन बृहदारण्यक

(६) तल्वाकार आरण्यक

(७) जैमिनी आरण्यक

@ उपनिषद ग्रंथ :-

उपनिषद का अर्थ है -समीप बैठना अर्थात उपनिषद एक ऐसा रहस्य ज्ञान है जिसे हम गुरु के सहयोग से ही समझ सकते हैं|

* उपनिषद में आत्मा परमात्मा एवं संसार के संदर्भ में प्रचलित दार्शनिक विचारों का संग्रह मिलता है|

* उपनिषद वैदिक साहित्य का अंतिम भाग है इसीलिए इन्हें "वेदांत" कहते हैं|

* वैसे तो उपनिषदों की संख्या 102 बताई गई है लेकिन

* मुख्य रूप से 12 उपनिषद ही प्रमुख हैं|

@ यह 12 उपनिषद इस प्रकार हैं-

ईशोपनिषद, कठोपनिषद, माणडुक्योपनिषद, मुण्डकोपनिषद, तैत्तिरीयोपनिष, ऐतरेयोपनिषद, छान्दोग्य उपनिषद्, श्वेताश्वर उपनिषद, वृहदारणयकोपनिषद, कौषितकी उपनिषद, प्रश्नोपनिषद आदि।

@ वेदों से संबंधित उपनिषद ग्रंथों का नाम:-

* ऋग्वेद :- ऐतरेय, कौषितकी।

* यजुर्वेद :- वृहदारण्यकोपनिषद, ईशोपनिषद।

* सामवेद :- छान्दोग्य उपनिषद, केन या तल्वाकर उपनिषद।

* अथर्ववेद :- मुण्डकोपनिषद, माण्डुक्योपनिषद, प्रश्नोपनिषद।

@ वेदांग:-

वैदिक साहित्य के अंतिम भाग होने के कारण इसे वेदांग कहा जाता है|

* वेदों के अर्थ को अच्छी तरह समझने में वेदांग अत्यधिक सहायक है|

@ वेदांगों की कुल संख्या 6 है :-

शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद, ज्योतिष|

* शिक्षा :- वैदिक वाक्य के स्पष्ट उच्चारण हेतु इसका निर्माण हुआ।

* कल्प :- वैदिक कर्मकांडों को संपन्न करवाने के लिए निश्चित किए गए विधि नियमों का प्रतिपादन ही कल्पसूत्र है।

 * कल्पसूत्र चार प्रकार का होता है|

(१) स्रौत सुत्र :-यज्ञ संबंधी कर्म काण्डों का वर्णन हैं।

(२) गृह्य सुत्र :- गृहस्थ के दैनिक यज्ञों का वर्णन है।

(३) धर्म सुत्र :- सामाजिक नियमों का वर्णन है।

(४) शुल्व सुत्र :- यज्ञ वेदियों के निर्माण का वर्णन है।

* व्याकरण सुत्र :- व्याकरण के नियमों का वर्णन है।

* निरुक्त :- यह बताता है कि अमुक शब्द का अमुक अर्थ क्यों होता है।

* यास्क ने निरूक्त की रचना की थी।

* छन्द :- वैदिक साहित्य में मुख्य रूप से गायत्री, त्रिष्टुप, वृहती, जगती, आदि छंदों का प्रयोग किया गया है।

* ज्योतिष :- इसमें ज्योतिष शास्त्र के विकास को दिखाया गया है।

" व्याकरण को वेद का मुख कहा जाता है

ज्योतिष को नेत्र, निरुक्त को स्रोत्र

कल्प को हाथ, शिक्षा को नासिक

छंद को दोनो पैर " कहते हैं।

आगे भी यह जारी है......